प्रातः क्लास　　　　　　　　　　ओमशान्ति　　　　　　　　　　5-9-67

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे सहज याद में बैठे हैं। कोई को डिफिकल्टी भी लगती है। बहुत मूंझते हैं। समझते हैं हम टाईट अथवा अशरीरिक होकर बैठे हैं। बाप कहते हैं ऐसे कोई बात नहीं है। कैसे भी बैठो बाप को सिर्फ याद करना है। इसमें मुश्किलात की कोई बात नहीं। वह हठ योग ऐसे टाइट होकर बैठते हैं। टांग टांग ऊपर चढ़ाते हैं। यहाँ तो बाबा कहते हैं आराम से बैठे रहो। बाप की याद और 84 के चक्र को याद करना है। यह है ही सहज याद। उठते-बैठते बुधि में याद रहे जैसे देखो यह छोटा बच्चा बाप के बाजू में बैठा है, इनकी बुधि में माँ-बाप ही याद होंगे। तुम भी बच्चे हो ना। बाप को याद करना तो बहुत सहज है। हम बाबा के बच्चे हैं, बाबा से ही वर्सा लेना है। शरीर निर्वाह अर्थ गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो। सिर्फ और की याद बुधि से निकाल दो। कोई हनुमान को, कोई किसको, कोई साधु आदि को याद करते थे। वह ही स्याद छोड़ देनी है। याद तो करते हैं ना। पूजा के लिए पुजारी को मंदिर आदि में जाना पड़ता है। इसमें कहीं जाने की दरकार नहीं है। कोई भी मिले उनको बोलो शिव बाबा का कहना है कि मुझ एक बाप को याद करो। शिव बाबा है निराकार। जरूर वह साकार में ही आये कर कहते हैं मामेकं याद करो। मैं पतित पावन हूँ। यह तो राइट अक्षर है ना। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। तुम सब पतित हो। यह पतित तामोप्रधान दुनिया है ना, इसलिए बाप कहते हैं: कोई भी देहधारी को याद न करो। मामेकं याद करो। यह तो अच्छी बात है ना। कोई गुरु आदि की महिमा नहीं करते हैं। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह है योग बल। अथवा योगाग्नि×। योगाग्नि।× अग्नि। बेहद के बाप तो सच्च कहते हैं ना। गीता का भगवान वह निराकार ही है। कृष्ण की बात नहीं। भगवान सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। और कोई उपाय नहीं। पावन होकर जाने से उंच पद पावेंगे। नहीं तो कम पद हो जावेगा। हम तुमको बाप का संदेश देते हैं। मैं संदेशी हूँ। इस समझानी में कोई तकलीफ नहीं। मातायें अहिल्यायें कुबजायें भी ऊंच पद पाय सकती हैं। चाहे यहाँ रहने वाले हो, चाहे घर गृहस्त में रहने वाले हो। ऐसे नहीं कि यहाँ रहने वाले जास्ती याद करते हैं। बाबा कहते हैं बाहर में रहने वाले भी बहुत याद कर सकते हैं। बहुत सर्विस कर सकते हैं। यहाँ भी बाप से रिफ्रेश होकर फिर जाते हैं तो अन्दर में कितनी खुशी रहनी चाहिए। इस छी2 दुनिया में तो बाकि थोड़े रोज× हैं। फिर चलेंगे अपने सुखधाम। कृष्णपुरी। कृष्ण के मंदिर को भी सुखधाम कहते हैं। तो बच्चों को अपार खुशी होनी चाहिए। जब कि तुम बेहद के बाप के बने हो। तुमको ही स्वर्ग का मालिक बनाया था। तुम भी कहते हो बाबा हम आप से 5000 वर्ष पहले भी मिले थे। अनेक बार मिले हैं। फिर भी मिलेंगे। अब बाप को याद करने से माया पर जीत पानी है। अब इस दुखधाम में तो रहना नहीं है। तुम पढ़ते ही हो सुखधाम जाने लिए। सब को हिसाब-किताब चुक्तू कर वापस जाना है। मैं आया हूँ ही नई दुनिया स्थापन करने। बाकि सब आत्मायें चली जावेंगी मुक्ति धाम। बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूँ ना। सब का शरीर छुड़वाये और आत्माओं को ले जाऊंगा। सब कहते भी हम जल्दी जावें। यहाँ तो रहने का नहीं है। यह तो पुरानी दुनिया पुराना शरीर है। अब बाप कहते मैं सब को ले जाऊंगा। छोड़ूंगा किसको भी नहीं। तुम सबने बुलाया ही है हे पतित पावन आओ। भल याद करते रहते हैं, परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते। पतित-पावन... की कितनी धुन लगाते हैं। फिर कहते रघुपति राजा राम। अब शिव बाबा तो राजा बनते ही नहीं। राजाई करते नहीं। उनको राजाराम कहना रांग हो गया। माला जब सुमिरते हैं तो राम2 कहते हैं। उसमें भगवान की याद आती है। भगवान तो है ही शिव। मनुष्यों ने नाम बहुत रख दिये हैं। कृष्ण को भी श्याम-सुन्दर, वैकुण्ठ नाथ, मक्खन चोर आदि2 बहुत नाम देते हैं। परन्तु है कुछ भी नहीं। तुम अभी कृष्ण को मक्खन चोर कहेंगे? कभी नहीं। कृष्ण ने इनको भगाया?। राम की सीता चुराई गई। यह तो ग्लानी करते हैं। बाप समझाते हैं यह कब हुआ नहीं है। तुम किसको

अपने धर्म की ग्लानी करते हो। क्राइस्ट के लिए कब कहेंगें अक्त कर लिया। अथवा वह कण2 में है। शिव बाबा के लिए तुम ऐसे क्यों कहते हो। कितनी तुच्छ बुद्धि को बाते है। यह तुम अभी समझते हो। मनुष्य कहेंगे शास्त्र सब झूठी है क्या। और यह बाते हो कैसे सकती। कितनी ग्लानी की है। यदा यदा... यह भगवानुवाच है ना। भगवान तो एक ही निराकार है। कोई देह धारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। ब्रह्मा, विष्णु शंकर को भी नहीं कह सकते। तो फिर पतित मनुष्यों को भगवान कैसे कह सकते। बाप की माला फिर भी तो 108 की बनाई जाती हैं। यह तो 16108 जगदगुरु अपन को कह देते। पाग और ही बढ़ाये दी है। आज कल माईयाँ भी निकली है श्री2, 108 जगदगुरु कहलाने वाली। बाप कहते है यह है ही वेश्यालय। यह (लक्ष्मी-नारायण) तो शिवालय के मालिक थे। शिव बाबा नकस्वर्ग स्थापन किया है। उनके यह मालिक हैं। जब इन से पहले इन्हों ने इतना पुरुषार्थ किया होगा इसको कहा जाता है कलयुग अन्त, सतयुग आद का संगम युग। यह है कल्प का संगम युग। मनुष्यों ने फिर युगे2 कह दिया है। अब तक नाम भी भूल कि ठिक-भिन्न में कह देते। भक्ति कितनी व्यभिचारी हो गई है। यह भी है ड्रामा। जो पास्ट हो जाती है। कोई से झगड़ा आद हुआ पास हुआ उनका चिन्तन नहीं करना चाहिए। अच्छा कोई ने कम जास्ती बोला तुम उनको भूल जाओ। कल्प पहले भी ऐसे बोला था। याद न रख रहने से फिर बिगड़ते रहेंगे। वह बात कब बोलो भी नहीं। तुम बच्चों को सर्विस तो करनी है ना। सर्विस में कब विघ्न न पड़ना चाहिए। सर्विस में कमजोरी न लानी चाहिए। शिव बाबा की सर्विस है ना। इन में जरा भी कोताही नहीं करनी चाहिए। नहीं तो बहुत अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। बाप की मददगार बने हो तो पूरी मदद देनी है। बाप को सर्विस में जरा भी धोखा न देना है। पैगाम सब को पहुँचाना है। बाप कहते है म्यूजियम खोलो। इनका नाम ऐसा रखो जो मनुष्य देखे अन्दर घुसे और आकर समझे। क्योंकि यह नई चीज है ना। मनुष्य नई चीज देख कर अन्दर घुसते हैं। आजकल बाहर से आये हैं भारत का प्राचीन योग सिखने। अब प्राचीन अर्थात पुरानी ते पुराना वह तो भगवान का ही सिखाया हुआ है। जिसको 5000 वर्ष हुये। सतयुग त्रेता में योग होता नहीं। जिस ने सिखाया वह तो चला गया। फिर जब 5000 वर्ष बाद आवे तब ही आये राजयोग सिखावे। प्राचीन अर्थात 5000 वर्ष पहले भगवान ने ही सुनाया था। वह ही भगवान फिर संगम पर आये राजयोग सिखावेंगें। जिस से पावन बन सकते हैं। इस समय तत्व भी तामोप्रधान है। पानी भी कितना नुकसान कर देते है। उपद्रव होती रहती हैं। पुरानी दुनिया में। सतयुग में उपद्रव की बात नहीं। वहाँ तो प्रकृति दासी बन जाती है। यहाँ प्रकृति दुश्मन है। दुःख देते हैं। इन लक्ष्मी नारायण के राज्य में दुःख की बात नहीं थी। सतयुग था। अभी फिर वह स्थापन हो रही है। बाप प्राचीन राजयोग सिखाये रहे हैं। फिर 5000 वर्ष बाद सिखावेंगें। जिसका पार्ट है वह ही बजावेंगें। बेहद का बाप भी पार्ट बजाये रहे है। बाप कहते है मैं इन में प्रवेश कर स्थापना कर फिर मैं चला जाता हूँ। हायहायकार के बाद फिर जयजयकार हो जाती है। पुरानी दुनिया खतम हो जावेंगी। इन (लक्ष्मी-नारायण) का राज्य था तो पुरानी दुनिया नहीं थी। 5000 वर्ष की बात है। लाखों वर्ष की बात तो हो नहीं सकती। तो बाप कहते हैं और सभी बातों को छोड़ इस सर्विस में लग जाओ। अपना कल्याण करने। उठ कर सर्विस में धोखा नहीं देना चाहिए। यह है ईश्वरीय सर्विस। इन के साथ धर्मराज भी है। माया के तूफान तो बहुत आवेंगें। परन्तु बाप की ईश्वरीय सर्विस में धोखा न देना है। बाप सर्विस अर्थ डायरेक्शन तो देते रहते हैं। मित्र सम्बन्धी आद जो भी आवे, सब के सच्चे मित्र तो तुम हो। तुम ब्रह्मा कुमारियाँ सारी दुनिया के मित्र हो। क्योंकि तुम बाप के मददगार हो। मित्रों में कोई शत्रुता न होनी चाहिए। कोई भी बात निकले बोलो शिव बाबा को याद करो। कोई हंगामा करने की दरकार नहीं। बाप की श्रीमत पर लग जाना है। नहीं तो अपना नुकसान करेंगे।

ट्रेन जब तुम आते हो, वहाँ तो सब फ्री है। सर्विस का बहुत अच्छा चान्स है। बैज तो बहुत अच्छी है। हरेक के पास लगा रहे। कोई भी पूछे यह क्या है, तुम कौन हो, बोलो पाथर ब्रिगेज होती है ना आग को बुझाने लिए। तो इस समय में सारी सृष्टि में काम अग्नि है। सब जले हुये है। अब बाप कहते हैं इन काम महाशत्रु पर जीत पहनो। बाप को याद करो, पवित्र बनो। दैवी गुण धारण करो। तो बेड़ा पार है। यह बैज तो श्रीमत से ही बनी है ना। बहुत थोड़े बच्चे हैं जो बैज पर सर्विस करते हैं। सोनीपत पार्टी आई है उनको भी बैज लगा हुआ नहीं है। बाबा मुरलियों में कितना समझाते रहते हैं। हरेक ब्राह्मणी के पास यह 100, 150 पड़ी रहे। कोई भी मिले उनको इस बार समझाना चाहिए। यह है बाबा। इनको याद करना है। हम साकार की महिमा नहीं करते। सब सदगति दाता एक ही निराकार बाप हैं। उनको याद करना है। याद के बल से ही तुम्हारे पाप कट जावेंगे। फिर अंत मते सो गति हो जावेगी। दुखधाम से छूट जावेंगे। कितनी बड़ी खुशखबरी है। कोई भी बैज मांगे दे दो। बोलो तुम अगर गरीब हो तो फ्री दे सकते हैं। शाहूकारों को तो देना ही चाहिए। क्योंकि यह तो बहुत बनानी होती है। यह चीज ऐसी है जिस से तुम फकीरों से विश्व का मालिक बनावेंगे। बाप को याद करने से ही तुम पावन बन जावेंगे। शिव बाबा को याद करो। कोई पाप न करो। नहीं तो सौ गुना बन जावेगा। समझानी तो मिलती ही रहती है। कोई भी धर्म वाला हो वास्तव में तुम आत्मा हो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। अब विनाश सामने खड़ा है। यह दुनिया बदलनी है। शिव बाबा को याद करेंगे तो विष्णुपुरी में जावेंगे। बैज मांगे तो दे देना चाहिए। बोलो यह गवाना नहीं। हम आप को करोड़ों पदमों की चीज देते हैं। बाबा ने कितना समझाया है बैज पर सर्विस करनी है परन्तु बैज लगाते ही नहीं। लज्जा आती है। ब्राह्मणियों

...हुआ नहीं है। यह तो हरेक का अपना2 पार्ट है। चैतन्य झाड़ है ना। झाड़ के पत्ते भी नम्बरवार निकलेंगे। इस झाड़ को कोई भी समझते नहीं है। इनका बीज ऊपर में है। इसलिए इनको उल्टा वृक्ष कहा जाता है। रचता बाप है ऊपर में। अभी तुम जानते हो हमको जाना है अपने घर। जहाँ सब आत्माएं रहती हैं। अभी हमको पवित्र बन कर जाना है। तुम्हारे द्वारा योग बल से सारी विश्व पवित्र हो जाती है। तुम्हारे लिए तो पवित्र सृष्टि चाहिए। तुम पवित्र बनते हो तो दुनिया भी जरूर पवित्र बनानी है। सब पवित्र हो जाते हैं। तुम्हारे बुद्धि में है कि यह झाड़ कैसे वृद्धि को पाता है। बाप की भी बुद्धि में है। आत्मा में ही मन बुद्धि है ना। चैतन्य है। आत्मा ही ज्ञान को धारण कर सकती है। जानवर थोड़े ही धारण करेंगे। तो मीठे बच्चों को सारा राज बुद्धि में होना चाहिए। कैसे हम पुनर्जन्म लेते हैं। 84 का चक्र कैसे पूरा होता है। तुम्हारा पूरा होता है तो सब का पूरा होता है। सब पावन बन जाते हैं। यह अनादी बना हुआ ड्रामा है। सो फिर कल्प बाद होगा। यह सब बातें समझने की हैं। हरेक आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। वह एक्टर्स तो करके 2-4 घण्टा का पार्ट बजाते हैं। यह तो आत्मा को नेचरल पार्ट मिला हुआ है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। अतिन्द्रिय सुख अभी संगम युग का ही गाया हुआ है। पछताछ अभी होती है। जब कि बाप आते हैं। तुमको सुख आता है। 21 जन्मों लिए हम सदा सुखी बनते हैं। खुशी की बातें हैं ना। जो अच्छी रीत समझते और समझाते हैं वह सर्विस पर लगे रहते हैं। बच्चियाँ तो जो सर्विस पर उछलती हैं उनकी सम्भाल भी करनी है। कोई2 इन्सल्ट भी कर देते हैं। पूरी रीत सम्भालते नहीं हैं। तो चले आना पड़े है। कोई2 तो ब्राह्मणियां कोई काम की नहीं होती। कहते हैं बाबा इन में तो अभिमान बहुत है। हुक्म चलाती रहती है। खुद ही क्रोधी है। तो दूसरे में भी इसकी प्रवेशता हो जाती है। ताली दो हाथ से बजती है। वहाँ ऐसे नहीं होता। यहाँ तुम बच्चों को शिक्षा मिलती है। कोई क्रोध करे तो प्यार से समझाओ। यह भी एक गुण है। बलि नुकसान कर देंगे। क्रोध कब न करना है।